



चित्र - शामा धारे

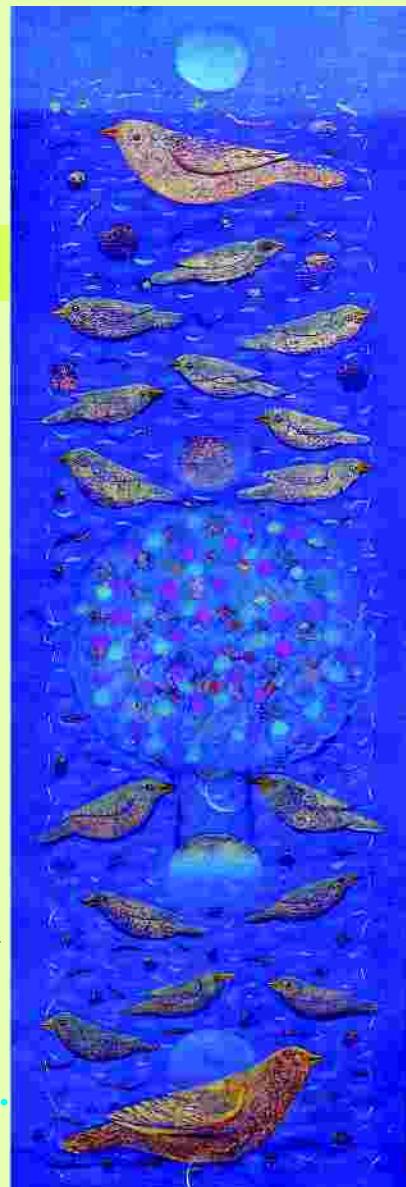
कऊआ उदास था

कऊआ उदास था ।

उदास । उदास ।

कऊआ उदास था ।

मुझे यह तो नहीं पता कि वह क्यों उदास था, पर था वह उदास । मैंने उसकी आँखों में एक कातर भाव देखा था । इसमें कोई शक नहीं कि वह उदास था । कभी-कभी उसके चेहरे पर गुस्सा चमकता था, पर फिर जल्दी ही वह फिर उदास हो जाता था । गौरय्या के बच्चे को गिर्द की निगाह से देखता या उसके अण्डों को तोड़कर सुड़कता, वह उदास बना रहता था । उस वक्त भी जब वह अन्य कऊओं से लड़ता-झगड़ता था या छत की मुँडेर पर काँव-काँव करता था, यह साफ नज़र आता था कि वह उदास था । कभी एक तीर की तरह वह नदी की ओर जाता था । या थोड़ी देर किसी डाल पर शान्त बैठा रहता था । फिर उसी उदास भाव से उड़कर अगले कई घण्टों तक गायब हो जाता था ।



चित्र - सिद्धार्थ

देखने को बहुत कुछ था

देखने को बहुत कुछ था ।

जैसे:

पेड़,

उसका तना,

उसकी टहनियाँ,

उसके पत्ते

जो हवा में लहराते थे,

फूल जो उस पर आते थे,

पक्षी जो उसी पेड़ पर धोंसले बनाते थे –

उन धोंसलों में छोटे-बड़े, चितकबरे अण्डे जो कुछ ही दिनों में पक्षियों में बदल जाते थे ।

देखने को बहुत कुछ था

मेरी कल्पना में ।

जैसे: